तीव्र पुरुषार्थ - 11

➢➢ क्षमा भाव

➳ _ ➳ जब तक हमारे मन में दूसरों के प्रति बदले का भाव है, तब तक हमें शांति का अनुभव नहीं हो सकता

→ बदला लेने की भावना आपकी शक्तियों का सम्पूरण रूप से नाश कर देगी ... आपका अभी तक किया हुआ सारा ज्ञान योग पूरी तरह से नष्ट कर देगा... समय , संकल्प, शक्ति सब कुछ नष्ट कर देगा...

➳ _ ➳ जब तक हम क्षमा नहीं करते हैं तब तक हम बंधन में बंधे हुए हैं

➢➢ क्षमा विधि

➳ _ ➳ पहले स्वीकार कीजिये की आप HURT हैं

→ नहीं तो अन्दर ही अन्दर आप SUPPRESS होते रहेंगे

➳ _ ➳ अब DECISION लीजिये की आपको क्षमा करना है

→ यदि तुम उसे माफ़ कर दोगे तो बाबा भी तुम्हे तुम्हारी गलतियों के लिए माफ़ कर देगा

→ जैसे हम अपनी गलतियों के लिए माफ़ी की उम्मीद रखते हैं, वैसे दूसरों की भी उनकी गलतियों के लिए माफ़ कर दो

→ बाबा ने भी हमारे सभी पापों को भुलाकर हमें अपना बच्चा बनाया है

→ हमें भी दूसरों ने हमारी गलतियों के लिए बहुत बार क्षमा किया है

➳ _ ➳ क्यों माफ़ करना है ?

→ क्योंकि हम पूर्वज, महान , दाता, विश्व कल्याणकारी आत्माएं हैं

→ हमें माफ़ करना है क्योंकि यह ईश्वरीय हुकुम / परमात्म आज्ञा है

→ हर आत्मा निर्दोष है... हर आत्मा का अपना पार्ट फिक्स है ...

→ कर्मों की गुह्य गति स्मृति में लाओ... हम अपने ही कर्मों का परिणाम भुगत रहे हैं...

➢➢ शिक्षा के साथ क्षमा

➳ _ ➳ इस भावना के साथ शिक्षा मत दो की

→ मैं राईट हूँ, तुम wrong हो

→ मैं बड़ा हूँ, तुम छोटे हो

→ मैं योग्य हूँ, तू अयोग्य हो

➳ _ ➳ भावना श्रेष्ठ होनी चाहिए

→ पहले स्वयं को स्वमान में स्थित कीजिये

→ फिर सामने वाले को स्वमान में स्थित कीजिये

→ और फिर प्यार से उसी समय / या बाद में थोडा समय लेकर समझाओ

Avyakt Murli Refrence :- Page Number 11 & 12 Of Teevra Purusharth Book

---